B.A. SPECIAL HINDI SYLLABUS

I Year, First Semester

(1) हिन्दी भाषा का उद्‌भव एवं विकास, काल विभाजन, नामकरण और नामकरण की समस्याएं |

(2) आदिकालीन कवि और उनकी रचनाएँ (क) रासो काव्य (ख) नाथ साहित्य (ग) जैन साहित्य

गोरख नाथ :

हसिबा बेलिबा रहिबा रंग, काम क्रोध न करीबा संग |

हसिबा षेलिबा गाइबा गीत दिढ करि रषिबा अपना चीत||

हषिबा षेलिबा धरिबा ध्यान, अहनिसि कथिबा ब्रहम गियान |

हसै षेलै न करै मत भंग, ते निहचल सदा नाथ के संग ||

हबकि न बोलिबा ढबकि न चलिबा, धीरे धरिबा पांव |

गरब न करिबा सहजै रहिबा, भणत गोरष रांव ||

धाये न षाइबा भूषे न मरिबा, अहनिसि लैब ब्रम्ह अगिनि का भेद

हठ न करिबा पड़या न रहिबा, यूं बोल्या गोरष देव||

भक्तिकाल :

भक्ति साहित्य के उद्‌भव का स्रोत और सामाजिक,धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियां |भक्तिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियां राम काव्य के कवि और उनकी रचनाएँ.

तुलसीदास की कविता – विनयपत्रिका

१ जाके प्रिय न राम-बैदेही। तजिये ताहि , कोटि बैरी सम, जद्‌यपि परम सनेही ॥

सो छाँड़िये तज्यो पिता प्रहलाद, बिभीषन बंधु ,बंधुभरत महतारी।

बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज-बनितन्हि, भये मुद -मंगलकारी ॥

नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेब्य जहाँलों।

अंजन कहा आँखि जेहि फूटै , बहुतक कहौं कहाँलौं ॥

तुलसि सो सब भाँति परम हित पूज्य प्रानते प्यारो।

जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो ॥

कवितावली-

पुर तें निकली रघु –बीर वधू धरि धीर दये डग में पग द्वै |

झलकै भरि भाल कनी जल की पुट सूखि गए मधुराधार कें |

फिर बूझति है चलनो अब केते पर्ण कुटी करि हौं कित वै |

तिय की लखि आतुरता पिय की आखियाँ अति चारु चली जल च्वे |

जल को गए लक्खन है लरिका ,परखो पिय छाँह घरीक है ठाढ़े |

पोंछी पसेउ बायारि करौं अरु पांय पखारिहौ भूभारि डाढे |

तुलसी रघुबीर पिया स्रम जानिकै ,बैठि विलंब लौं कंटक काढ़े |

जानकी नाह को नेह लख्यों ,पुलको टन बारि बिलोचन बाढे ||

सूरदास के पद – विनय के पद

मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।

जैसे उड़ि जहाज़ को पंछी, फिरि जहाज़ पर आवै।।

कमल-नैन कौ छांड़ि महातम, और देव कौ ध्यावै।

परम गंग कौं छांड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।।

जिहि मधुकर अंबूज-रस-चाख्यौ, क्यों करील-फल भावै।।

सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।

बालकृष्ण

सोभित कर नवनीत लिए।

घुटुरुनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किए।

चारु कपोल लोल लोचन, गोरोचन तिलक दिए।

लट लटकनि मनु मत्त मधुप गन मादक मधुहिं पिए।

कठुला कंठ बज्र केहरि नख, राजत रुचिर हिए।

धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए।।

संत साहित्य :

कबीरदास के पद

दुख में सुमरिन सब करे, सुख में करे न कोय ।

जो सुख में सुमरिन करे, दुख काहे को होय ॥ 1 ॥

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर ।

कर का मन का डार दें, मन का मनका फेर ॥ 2 ॥

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागूं पाँय ।

बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो बताय ॥ 3 ॥

सुख में सुमिरन ना किया, दु:ख में किया याद ।

कह कबीर ता दास की, कौन सुने फरियाद ॥ 4 ॥

साईं इतना दीजिये, जा में कुटुम समाय ।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु ना भूखा जाय ॥ 5 ॥

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान ।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥ 6 ॥

माटी कहे कुम्हार से, तु क्या रौंदे मोय ।

एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोय ॥ 7

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।

पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब ॥ 8

ऐसी वाणी बोलेए, मन का आपा खोय ।

औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय ॥ 9 ॥

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय ।

सार-सार को गहि रहे, थोथ देइ उड़ाय ॥ 10 ॥

सूफी काव्य :सूफी काव्य परंपरा , प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ |

जायसी की कविता –नखशिख खंड़ [पद्मावत]

रीतिकाल : रीतिकालीन प्रवृत्तियां (रीतिबद्ध ,रीति सिद्ध एवं रीति मुक्त)

घनानंद की कविता

1-रवारे रूप की रीति अनूप ,नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारियै |

त्यों इन अँखिन बानि अनोखी ,आघानि काहू नहि आणि तिहारियै |

एक ही जीव हुतौ सुतौ वारयौ ,सुजान ,सकोच औ सोच सहारियै |

रोकी रहै न , दहै, घन आनंद, बावरी रीझकै, हाथ निहारियै ||

2-अति सूधौ सनेह को मारग है ,जहां नेकु सयानप बँक नहीं |

तहां साँचे चलै तजि आपनपौ,झूझके कपटी निसाँक नहीं |

घनानन्द, प्यारे सुजान सुनौ,यहाँ एकतै दूसरौ आंक नहीं |

तुम कौन धो पाटी पढे हौ कहौ ,मन लेहु पै देहु छटाँक नही .

3-झलकै अति सुंदर आनन गौर छके दृग रजत काननि छुवै

हंस बोलन में छवि फूलन की बरसा उर ऊपर जाति ह्वै है |

लट लोल कपोल कलोल करै ,कल कंठ बनी जलजावलि द्वै |

अंग अंग तरंग उठे दुतिकी ,परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै ||

बिहारी की कविता

सतसई के दोहे

1. मेरी भाव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

   जां तन की झांई परै, स्यामु हरित-दुति होइ।।

2. दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित्त प्रीति।

   परिति गांठि दुरजन-हियै, दई नई यह रीति।।

3. कनक कनक तैं सौ गुनी मादकता अधिकाय।

   उहिं खाएं बौराय नर, इहिं पाएं बौराय।।

4. या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोई।

   ज्यौं-ज्यौं बूड़े स्याम रंग,त्यौं-त्यौ उज्जलु होइ।।

5. कहत,नटत, रीझत,खिझत, मिलत, खिलत, लजिपात।

   भरे भौर में करत है, नैननु ही सब बात।।

6. पत्रा ही तिथि पाइयो ,वा घर के चहुँ पास।

   नित प्रति पुन्यौई रहै, आनन-ओप-उजास।।

7. बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।

   सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ॥

8. कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।

   कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात॥

9. नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास यहि काल ।

   अली कली में ही बिन्ध्यो आगे कौन हवाल ।।

10. इत आवति चलि जाति उत, चली छसातक हाथ।

    चढ़ी हिडोरैं सी रहै, लगी उसाँसनु साथ।।

संदर्भ ग्रंथ- सूची

1- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

2-नाथ संप्रदाय - हजारी प्रसाद द्विवेदी

3-हिन्दी साहित्य का आदिकाल- हजारी प्रसाद द्विवेद

4-कबीर ग्रंथावली - श्यामसुन्दर दास

5- कबीर - हजारी प्रसाद द्विवेदी

6-जायसी - विजयदेव नारायण साही

7-त्रिवेणी - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

8-सूर और उनका साहित्य - डॉ हरवंश लाल वर्मा

9-तुलसी काव्य मीमांसा- डॉ उदयभान सिंह

10- बिहारी का नव मूल्यांकन - डॉ बच्चन सिंह

11-रीतिकाव्य की भूमिका - डॉ नगेन्द्र

B.A. SPECIAL HINDI SYLLBUS

I Year, Second Semester

आधुनिक काल

भारतेन्दु युग : (भारतेन्दु युगीन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियां , नवजागरण की चेतना, राष्ट्रीय चेतना , भारतेन्दु युगीन कवि एवं उनकी रचनाएँ)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र -कहाँ करूणनिधि केशव सोए

द्विवेदी युग :

(द्विवेदी युगीन काव्य की प्रवृत्तियां, राष्ट्रीय भावना, आदर्शोन्मुखता ,द्विवेदी युगीन कवि एवं उनकी रचनाएँ)

मैथलीशरण गुप्त -सखि वे मुझसे कह कर जाते

रामधारी सिंह दिनकर -जनतंत्र का जन्म

राष्ट्रीय धारा : सुभद्रा कुमारी चौहान -जलियां वाला बाग में बसंत

प्रयोजन मूलक हिन्दी :

राजभाषा हिन्दी का संवैधानिक स्थान , राजभाषा ,राष्ट्रभाषा , संपर्क भाषा , भाषा और बोली

पत्र लेखन : प्रशासनिक पत्र , ज्ञापन ,सूचना , अधिसूचना , पारिभाषिक शब्दावली |

संदर्भग्रंथ-सूची-

1- भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परंपरा -रामविलास शर्मा

2- हिन्दी नवजागरण और संस्कृति- शंभुनाथ

3-हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचंद्र शुक्ल

4- भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्या- रामविलास शर्मा

5- आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास- डॉ कृष्ण लाल

7-हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी

8- हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास - कुसुम राय

B.A. SPECIAlL HINDI SYLLABUS

II Year , Third Semester

(हिन्दी उपन्यास के उत्पत्ति की पृष्ठभूमि और उसका विकास .भारतेन्दु युग ,प्रेमचंद युग , प्रेमचंदोत्तर युग)

1- निर्मला - मुन्शी प्रेमचंद

(ख) -(हिन्दी कहानी की उत्पत्ति और उसका विकास, भारतेन्दु युग ,प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग एवं कहानी के अन्य विविध आंदोलन)

1- प्रेमचंद - ठाकुर का कुआं

2- जैनेन्द्र –पत्नी

3-मोहन राकेश - मलबे का मालिक

4- यशपाल – परदा

5- फणिश्वरनाथ रेणू -पंच लाईट

6- राजेन्द्र यादव - बिरादरी बाहर

7- शानी -एक नाव के यात्री

8- अमरकांत- डिप्टी कलेक्टरी

9- कृष्णा सोबती - सिक्का बदल गया

10- ओमप्रकाश बाल्मीकि - शवयात्रा

(ग) (हिन्दी नाटक के विकास की पृष्ठभूमि ,भारतेन्दु युगीन नाटक , प्रसाद युग , प्रसादोत्तर युग)

1-भारतेन्दु हरिश्चंद्र - अंधेर नगरी

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1-हिन्दी गद्य विन्यास और विकास- राम स्वरूप चतुर्वेदी

2-हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश

3- हिन्दी उपन्यास का विकास – मधुरेश

4-प्रेमचंद और उसका युग - रामविलास शर्मा

5- कुछ कहानियां : कुछ विचार - विश्वनाथ त्रिपाठी

6-हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास -डॉ दशरथ ओझा

7-दुनियां समानांतर - राजेन्द्र यादव

8- आधुनिक साहित्य - नंददुलारे वाजपेयी

B.A. SPECIAL HINDI SYLLABUS

II Year , Forth Semester

(छायावाद, प्रगतिवाद ,प्रयोगवाद, नई कविता ,साठोत्तरी कविता एवं समकालीन कविता)

1- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – भिक्षुक

2- 2- जयशंकर प्रसाद- अरुण यह मधुमय देश हमारा

3- 3- नागार्जुन- अकाल और उसके बाद

4- 4- मुक्तिबोध - भूल गलती

5- 5- सच्चिदानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' - कलगी बाजरे की

6- 6- धूमिल – मोचीराम

7- 7- केदारनाथ सिंह - पानी से घिरे हुए लोग

8- 8- रमाशंकर यादव 'विद्रोही' – औरत

9- 9- राजेश जोशी -मारे जाएंगे

10- 10- निर्मला पुतुल - क्या तुम जानते हो ?

भारतीय काव्य शास्त्र

1- रस संप्रदाय, रस निष्पति

2- 2- अलंकार संप्रदाय - (क) अर्थालंकार और उसके भेद (ख) शब्दालंकार और उसके भेद3- छंद परिचय - छंद के भेद

3- 4- शब्द-शक्ति

4- 5- महाकाव्य ,प्रबंधकाव्य , खंडकाव्य

संदर्भ ग्रंथ-सूची-

1- क्रांतिकारी कवि निराला - बच्चन सिंह

2 प्रगतिवाद - रामविलास शर्मा

2- 3- तार सप्तक - सच्चिदानंद वात्सायन 'अज्ञेय

3- '4- नयी कविता : सीमाएं और संभावनाएं- गिरजाकुमार माथुर

4- 5- नयी कविता :स्वरूप और और समस्याएं - जगदीश गुप्त

5- 6- निराला और मुक्तिबोध -नन्द किशोर नवल

6- 7- नयी खेती - रमाशंकर यादव 'विद्रोही

7- '8- विद्रोही होगा हमारा कवि - संतोष अर्श

8- 9- काव्य शास्त्र - डॉ भागीरथ मिश्र

9- 10- रस सिद्धांत -नंददुलारे बाजपेयी

10- 11- काव्य के तत्व - देवेन्द्रनाथ शर्मा

11- 12- सामान्य हिन्दी - पृथ्वीनाथ पाण्डेय

B.A. SAECIAL HINDI SYLLABUS

III Year ,Fifth Semester

(कथेतर गद्य साहित्य)

1- हिन्दी आत्मकथा का संक्षिप्त परिचय -

मुर्दहिया - तुलसी राम

2- रेखाचित्र : विकास एवं संक्षिप्त परिचय

महादेवी वर्मा - भक्तिन

3- संस्मरण : विकास एवं संक्षिप्त परिचय

न किसी की आंख का नूर हूँ - कुमार पंकज

4-निबंध : विकास एवं संक्षिप्त परिचय

ईष्या - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

5- व्यंग्य : विकास एवं संक्षिप्त परिचय

वैष्णव की फिसलन- हरिशंकर परसाई

6-यात्रा वृत्तांत : विकास एवं संक्षिप्त परिचय

अथातो घुमक्कड जिज्ञासा - राहुल सांकृत्यान

7- एकांकी : विकास एवं संक्षिप्त परिचय

तौलिए -उपेन्द्रनाथ अश्क

8 जीवनी आवारा मसीहा –

विष्णु प्रभाकर (कुछ अंश)

9- रिपोर्ताज : संक्षिप्त परिचय

9- हिन्दी आलोचना का विकास

आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी,रामविलास शर्मा , नामवर सिंह

संदर्भ ग्रंथ - सूची –

-1- दलित साहित्य एक अंतर्यात्रा - बजरंग बिहारी तिवारी

2- गद्य की नई विधाओं का विकास - माजदा असद

3-हिन्दी गद्य विन्यास और विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी

4-हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचंद्र तिवारी

5-रंजिश ही सही - कुमार पंकज

6--हिन्दी निबंध : उद्भव और विकास - हरिचरण शर्मा

7-हिन्दी का आधुनिक यात्रा साहित्य - प्रतापपाल शर्मा

8- नई समीक्षा के प्रतिमान - डॉ निर्मला जैन

9 हिन्दी आलोचना का विकास - नन्द किशोर नवल

10--हिन्दी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी

Dr. Ramesh yadav

Assistant Professor in Hindi
Govt. Degree College Jammalamadugu
BOS Chairman Y V U Kadapa